आचार्य वट्टकेर

जीवन-परिचय : आचार्य वट्टकेर कुन्दकुन्दाचार्य से भिन्न हैं या अभिन्न, इस सम्बन्ध में मतभेद है। परन्तु मूलाचार ग्रन्थ का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि वट्टकेर एक स्वतन्त्र आचार्य हैं और कुन्दकुन्दाचार्य से भिन्न हैं।

आचार्य वसुनन्दि ने मूलाचार की संस्कृत-टीका लिखी है और इस टीका की प्रशस्ति में इस ग्रन्थ के कर्त्ता का वट्टकेर, वट्टकेर्याचार्य तथा वट्टकेराचार्य के रूप में परिचय दिया है। वट्टक का अर्थ वर्तक-प्रवर्तक है, जिसकी वाणी प्रवृतिका हो—जनता को सन्मार्ग तथा सदाचार में लगाने वाली हो, उसे वट्टकेर समझना चाहिए।

आचार्य वट्टकेर के सम्बन्ध में अभी तक पट्टावलि एवं अभिलेखों में कुछ भी परिचय प्राप्त नहीं होता है, अत: उनके समय के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है, परन्तु मूलाचार की विषयवस्तु के अध्ययन से इतना स्पष्ट है कि ये बहुत प्राचीन हैं।

रचना-परिचय : आचार्य वट्टकेर द्वारा रचित एकमात्र ग्रन्थ 'मूलाचार' है।

1. मूलाचार : इसमें मुनि के आचार (नियम एवं सिद्धान्त) का बहुत ही विस्तृत एवं सुन्दर वर्णन किया है। मुनिधर्म को जानने के लिए एक स्थान पर इससे अधिक सामग्री का मिलना कठिन है। इस ग्रन्थ में 12 अधिकार और 1252 गाथाएँ हैं। भाषा और शैली की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ प्राचीन प्रतीत होता है। उत्तरवर्ती अनेक आचार्यों और ग्रन्थकारों ने इस ग्रन्थ की गाथाओं को उदाहरण के रूप में ग्रहण किया है।